सं • श्रो • वि • | सोनीपत | 30-85 | 18178. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कोरल कैमीकल श्रां. लि.; जी. टी. रोड़, सोनीपत, के श्रमिक श्री वीर वहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदीगिक विवाद है ;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसिनये, प्रव, श्रीक्षोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं० 3864-ए.-एस-श्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे किसा सामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित गामला है:---

क्या श्री बीर वहादुर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं थो वि./सोनीपत/229-84/18238 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. गोल्डन रवड़, गोल्डन रोल्ज प्रा. लि॰ गांव रसोई, डाकखाना नःथूपुर, जिला सोनीपत, के श्रमिक श्री प्रेमपाल विह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित पामलें में कोई घोद्योगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यापाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रीवोगिक विवाद श्रीवित्यम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तणों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीवसूचना सं 96.11-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रीवसूचना सं 3864-ए.एम.श्रो.(ई)-श्रम/70/1348, दिनांक 8 मई, 1970, द्वारा उक्त श्रीविनयम की घारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, गोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से भूसंगत या अम्बन्धित मामला है :— क्या श्री प्रेमगन विह की तेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 25 ग्रप्रैल, 1985

सं ग्री. वि./फरोदाबाद/63-85/18484.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अजीत इन्डस्ट्रीज, 43, डी. एल.एफ., फरोदाबाद के श्रमिक श्री भवत प्रसाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद तिखित मामले में कोई भीचीगिक विवाद है;

मोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेत् निर्देष्ट करना बांछनीय समझसे हैं;

इसलिए, भ्रव, श्रोचोगिक विवाद भिष्ठितियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई मिलिएों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून. 1963, के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं 511495-जी-श्रम-88-श्रम/57/:1245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त भिष्ठितियम को द्वारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरोदायाद, को विचादयस्त या उपसे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विचादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री भवत प्रसाद की सेवास्रों का समापत न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. मो.वि./भिश्वानी/11-85/18-191.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ विधाना को आपरेटिव सर्विस सोसाईटी लि., विधाना, जिला जीन्द, के श्रमिक श्री राम पाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीशोगिक विवाद है;

भीर चूंकि द्रियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, स्रव श्रौद्योगिक विवाद श्रीधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए-एस. थी. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 हारा उक्त अधिनियम की द्वारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या सो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. वि./गुड़गांवा/129-84/18498.—वृंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० बार माल्ट इंण्डिया प्रा० लि०, गुड़गांवा, के श्रमिक श्री राम। यादव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीहोगिक विवाद है;

भोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :

इसलिए, श्रव, भौद्योगिक त्रिवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-66/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री रामा यादव की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰वि॰/फरीदाबाद/27-85/18512.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ विजेता टैकाटाईल, मार्कत विशेतः टैकाटाईत, सैकाट-2, किंगाव रोड, बल्लबगढ़ के श्रमिक श्री रामजीत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415—3—श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम 88—श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सन्विध्यत नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत सम्बन्धित मामला है:——

क्या श्री रामजीत की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. वि./फरीदाबाद/24-85/1851.9.--चूंकि इत्यिश्णा के राज्यपाल की राय है कि मै० कुंडिम्प एजैन्सीज प्राव् लि०, प्लाट नं० 100, सैक्टर-6, फरोदाबाद, के श्रामिक श्री एलंक्जेन्डर पी०वी० तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके बाद तिबित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायांनेर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बां**छनीय समझते हैं** ;

इसलिए, भ्रब, भ्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के प्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत भ्रथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री एलेक्जेन्डर पी०वी० की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?